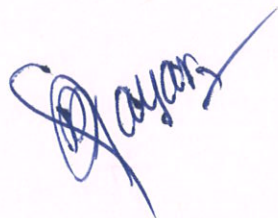

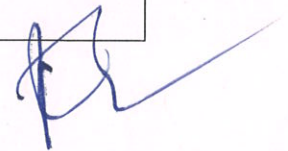


Course code	Gadhya, Darshan & Vyakaran, Paper- I (Core Course 8A)	L	T	P	C
BSANL20Y201	गद्य, दर्शन एवं व्याकरण	3	2	0	5
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		50 Marks			
<b>Course Objectives:</b>					
<ul style="list-style-type: none"> <li>विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।</li> <li>छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना।</li> <li>संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।</li> <li>भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।</li> <li>गद्य, दर्शन एवं व्याकरण का ज्ञान प्रदान करना।</li> </ul>					
<b>Course Outcome:</b>					
<ul style="list-style-type: none"> <li>संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।</li> <li>संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।</li> <li>गद्य, दर्शन एवं व्याकरण के समस्त तत्वों का ज्ञान प्रदान करना।</li> </ul>					
<b>Student Learning Outcomes (SLO):</b>					
<ul style="list-style-type: none"> <li>छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।</li> <li>छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।</li> <li>भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियां एवं प्रयोगों का विकास होना।</li> <li>भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।</li> <li>गद्य, दर्शन एवं व्याकरण का अभ्यास होना।</li> </ul>					
<b>Unit - 1</b>		<b>15</b>			
<ul style="list-style-type: none"> <li>शुकनासोपदेश, बाणभट्ट विरचित कादम्बरी से (व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न) रचना एवं</li> <li>रचनाकार का परिचय</li> </ul>					
<b>Unit - 2</b>		<b>15</b>			
<ul style="list-style-type: none"> <li>आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदांत तथा मीमांसा)</li> <li>चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय अपेक्षित है।</li> </ul>					
<b>Unit - 3</b>		<b>15</b>			
<ul style="list-style-type: none"> <li>भारतीय संस्कृति – वर्णाश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ, संस्कार, भारतीय कला एवं तकनीकी विज्ञान।</li> </ul>					
<b>Unit - 4</b>		<b>15</b>			
<ul style="list-style-type: none"> <li>वाच्य परिवर्तन (कर्तृ, कर्म, एवं भाव वाच्य के नियम तथा उदाहरण अपेक्षित है।</li> <li>(संस्कृत में एक निबंध)</li> </ul>					
<b>Unit - 5</b>		<b>15</b>			
<ul style="list-style-type: none"> <li>समास – (लघुसिद्धांत कौमुदी से विग्रह एवं समास का ज्ञान अपेक्षित है। प्रमुख व्याकरणाचार्य परिचय पाणिनी कात्यायन, पतंजलि, भट्टोजिदीक्षित, जैनेन्द्र, हेमचंद्र)।</li> </ul>					



आनंद अरोरा





# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures

**Text Book(s) / Reference Books**

1. लघु सिद्धान्त कौमुदी – भट्टोजि दीक्षित, भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, महेश सिंह कुशवाहा
2. वाक्यपदीयम् – भर्तृहरि, डॉ. सूर्यनारायण शुक्ल।
3. निरुक्त – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, कपिलदेव शास्त्री साहित्य भण्डार।
4. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
5. तुलनात्मक भाषा शास्त्र – डॉ. मंगलदेव शास्त्री।
6. संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन – डॉ. भोलाशंकर व्यास, भारतीय ज्ञान पीठ काशी
7. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र – डॉ. कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
8. संस्कृत व्याकरण शास्त्र दोनो भाग का इतिहास – पं. युधिष्ठिर मीमांसक
9. कातंत्र व्याकरण शर्ववर्मकृत भावसेन त्रैविद्य, त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर मेरठ
10. जैन वाङ्मय का संस्कृत में योगदान : –डॉ. नेमीचन्द्र जैन, आरा (विहार)।
11. मनुस्मृति, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
12. सांख्यकारिका – उमाकान्त शुक्ल, ज्ञान प्रकाशन, मेरठ।
13. भारतीय दर्शन – डॉ. उमेश मिश्र, हिन्दी समिति, उ.प्र. सरकार
14. वेदांतसार – चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
15. जैन धर्म और दर्शन – मुनि प्रमाण सागर, भारतीय ज्ञान पीठ, नई दिल्ली।



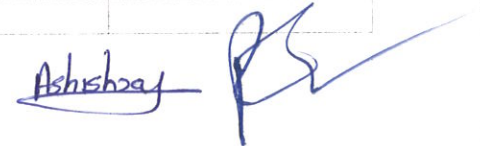
आनंद सिंह



Course code	Mahakavya & Natak Paper- II, (Core Course 8B)	L	T	P	C
BSANL20Y202	महाकाव्य एवं नाटक	3	2	0	5
Pre-requisite	Nil	Syllabus version 50 Marks			
<b>Course Objectives:</b>					
<ul style="list-style-type: none"> <li>विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।</li> <li>छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना।</li> <li>संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।</li> <li>भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।</li> <li>महाकाव्य एवं नाटक के तत्वों की जानकारी प्रदान करना।</li> </ul>					
<b>Course Outcome:</b>					
<ul style="list-style-type: none"> <li>संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।</li> <li>संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।</li> <li>महाकाव्य एवं नाटक विधा में पारंगत करना।</li> </ul>					
<b>Student Learning Outcomes (SLO):</b>					
<ul style="list-style-type: none"> <li>छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।</li> <li>छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।</li> <li>भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियां एवं प्रयोगों का विकास होना।</li> <li>भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।</li> <li>महाकाव्य एवं नाटक के तत्वों का सतत अभ्यास होना।</li> </ul>					
<b>Unit - 1</b>					<b>15</b>
<ul style="list-style-type: none"> <li>कुमारसम्भव का परिचय,</li> <li>कुमारसम्भव प्रथम सर्ग – 1-30 तक की व्याख्या एवं समीक्षा।</li> </ul>					
<b>Unit - 2</b>					<b>15</b>
<ul style="list-style-type: none"> <li>नाट्यशास्त्र (प्रथम अध्याय) नाट्योत्पत्ति एवं नाट्य प्रयोजन से संबंधित पाठ्यांशों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्न।</li> </ul>					
<b>Unit - 3</b>					<b>15</b>
<ul style="list-style-type: none"> <li>नाट्यशास्त्र के पारिभाषिक शब्द। (प्रस्तावना, नान्दी, सूत्रधार, विष्कम्भक, प्रवेशक, विदूषक, प्रकाश, स्वगत एवं भरतवाक्य।</li> </ul>					
<b>Unit - 4</b>					<b>15</b>
<ul style="list-style-type: none"> <li>अभिज्ञानशाकुन्तलम् – प्रथम, चतुर्थ एवं पंचम अंक के पाठ्यांशों की व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न।</li> </ul>					
<b>Unit - 5</b>					<b>15</b>
<ul style="list-style-type: none"> <li>संस्कृत के प्रतिनिधि नाट्यकार व उनकी कृतियां। (भास, कालिदास, शूद्रक, विशाखादत्त, श्रीहर्ष, भवभूति एवं भट्ट नारायण)</li> </ul>					



आनंद



# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text Book(s) / Reference Books			
<ol style="list-style-type: none"> <li>1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजयकुमार, इलाहाबाद।</li> <li>2. कालिदास ग्रन्थावली, पं. सीताराम चतुर्वेदी, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान (लखनऊ)</li> <li>3. महाकविकालिदास, रमाशंकर तिवारी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।</li> <li>4. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी।</li> <li>5. संस्कृत सुकवि समीक्षा, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।</li> <li>6. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, प्रो. रामजी उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।</li> <li>7. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।</li> <li>8. नाट्य शास्त्र, भरत मुनि, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।</li> </ol>			



आनंद जी

